"Struggles and Sacrifice of Tribes in the Freedom Movement"

"स्वतन्त्रता आंदोलन में जनजातियों का संघर्ष और बलिदान"

- Dr. Jyoti Pal
Head of Department Education Faculty
Sam Global University Bhopal
Richa Yadav
Research Fellow Ph.D. Faculty of Education
Sam Global University Bhopal
-Dr. Vinod Kumar Panika
Jawaharlal Nehru Policy Research Center
Awadhesh Pratap Singh University Rewa, (Madhya Pradesh)

सारांशः– आजादी के 75 वर्ष के समापन के उपलक्ष्य मे आज भारत का प्रत्येक नागरिक,बूढ़े,बच्चे और समस्त महिलाएं भी सहभागिता करते हुए खुशियाँ मना रहे हैं। भारत के प्रधान–मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी देश की आजादी की गरिमा एवं सम्मान को अधिक बढ़ाने के लिए दिनांक 12 मार्च 2021 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम मे आजादी के अमृत महोत्सव का उदघाटन कर ऐलान किया की 15 अगस्त 2023 तक भारत मे बड़े ही हर्षोल्लास के साथ अमृत महोत्सव मनाया जाएगा। इसी तर्ज पर देश के विद्यालय एवं विश्वविद्यालयों मे देश की स्वतन्त्रता का अमृत महोत्सव मानते हुए अनेकों सेमिनार वेबिनारों का आयोजन किया गया । देश के विभिन्न विद्वानों ने स्वतन्त्रता से संबन्धित अनेक गूढ रहस्यों को उजागीर किया। देश के जन–जन मे खुशी की लहर तब दौड़ने लगी जब स्वयं देश के प्रधानमंत्री महोदय ने आजादी के 75 वर्षों के बाद पहली बार देश के प्रत्येक नागरिक, विद्यार्थी, संस्थान, उद्योग तथा प्रत्येक घरों मे "हर घर तिरंगा" के तहत राष्ट्र ध्वज फहराने का अधिकार दिया। दिनांक–13 अगस्त 2022 से दिनांक 16/08/2022 तक हर घर मे तिरंगा झण्डा लहराते देख कर प्रत्येक भारतवासियों का हृदय प्रफुल्लित हो उठा।

एक समय था की लोगों को तिरंगा झण्डा फहराने मे शासन/प्रशासन के नियमों का बहुत ज्यादा डर लग रहा था। किन्तु इस वर्ष 15 अगस्त के शुभ अवशर पर राष्ट्रध्वज फहराने का आनंद और राष्ट्र गौरव के लिए अपने योगदान को हर घर ने दिया। जिस तरतह दीपावली मे भारत के सभी घरों मे दीपक जलाकर भगवान राम का स्वागत किया जाता है । ठीक उसी प्रकार इस वर्ष 13 अगस्त से 16 अगस्त तक हर घर मे तिरंगा लहराया और सम्पूर्ण भारत तिरंगे के रंगों से सराबोर हो उठा। मन मे खुशी की लहर दौड़ जाती है जब यह आंकड़ा सामने आता है की देश मे लगभग एक अरब से अधिक राष्ट्र ध्वज लहराया गया। इस राष्ट्र ध्वज को लहराने मे हमारे देश के अनगणित वीर सपूतों ने भारत माता की आजादी के लिए अपने प्राणों को भी बलिदान कर दिया।देश की आजादी के लिए हिन्दू, मुस्लिम, सिख ,ईसाई, जैन, बौद्ध सभी धर्मों, तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय , वैश्य, शूद्र सभी वर्णों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया है। तब जा कर आज हम सभी को अपने स्वतंत्र देश की तिरंगा झण्डा को फहराने का शुभ अवसर मिल पाता है। 15 अगस्त 1947 से ले कर आज तक हम सभी को यह स्वर्णिम अवसर मिलता है इसके लिए हमे उन महान देशभक्तों शहीदों को याद करना चाहिए,उनको श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहिए।

बीज शब्द :– आजादी, राष्ट्रभक्त , बलिदान, दमन नीति, स्वतन्त्रता, जनजाति,आंदोलन, विद्रोह ।

प्रस्तावना –भारत जिसे अखंड भारत के नाम से भी जाना जाता था । अखंड भारत का विस्तार आज के भारत से भिन्न था । आज का भारत जो कि मात्र 33 लाख वर्ग किलो मीटर है वी कभी 83 लाख वर्ग किलो मीटर के वृहद क्षेत्र मे विस्तृत रूप से फैला हुआ था। आज से 2700 वर्ष पहले भारत विश्व गुरु था। तक्षशिला जैसे भारतीय गुरुकुल पद्धति से पढ़ाये जाने वाली विश्वविद्यालय जिसमे 64 से अधिक विषय उस समय पढ़ाया जाता था जबकि किसी भी देश के पास चिकित्सा कि सुविधा तक नहीं था। लगातार विदेशी आक्रमणकारियों का अखंड भारत शिकार हुआ। परिणाम यह हुआ कि आखण्ड भारत के 14 विभाजन हो चुके हैं । फारसी यूनानियों तथा शिकंदर का आक्रमण 326 ईसा तक। खलीफाओं का आक्रमण 638 ईस्वी से 711 ईस्वी तक । मोहम्मद बिन काशिम का आक्रमण 712 ईस्वी । महमूद गजनबी का आक्रमण 1001 से 1026 ईसा तक ।[1] मोहम्मद गौरी का आक्रमण 1175 से 1182 ईस्वी तक । 1398 के आसपास तैमूर लंग का आक्रमण। 1519 से 1526 तक बाबर का आक्रमण । इसके बाद डच फ्रांसीसी पुर्तगाल और अंग्रेजों का भारत को गुलाम बनाना। इस अखंड भारत से यमन बांगलादेश मालदीव मलेशिया कंबोडिया भूटान श्रीलंका वर्मा पाकिस्तान वियतनाम इन्डोनेशिया अफगानिस्तान फिलीपींस नेपाल थायलैन्ड ये सभी देश अखंड भारत के टुकड़े हैं।

16 वी शताब्दी मे क्रमशः डच फ्रांसीसी पुर्तगाल और अंत मे भारत मे अंग्रेज़ आए। फूट डालो और शासन करो कि नीति अपना कर अंग्रेजों ने भारतीय शासकों को आपस मे लड़वाकर फायदा उठाए और धीरे–धीरे सम्पूर्ण भारत पर कब्जा जमा लिए।1857 के बाद भारत मे अंग्रेजों द्वारा जब अत्यधिक मात्र मे भारतीय संपत्ति और अमूल्य वस्तुओं को देश से बाहर ले जया जाने लगा और साथ ही सैनिकों के कारतूस मे गाय कि चर्बी मिलाया गया तो सम्पूर्ण भारत मे प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम एवं स्वराज का युद्धपात हुआ। हालांकि अंग्रेजों ने इस प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम को कुचल कर रख दिया। तथापि भारतीय आम जनों मे स्वतन्त्रता कि चाहत और मातृभूमि के प्रति प्रेम के कारण अंग्रेजों को भारत से भागने का कार्यक्रम सतत रूप से चलाया जा रहा था। इस प्रक्रिया के दौरान अनेकों भारतीय वीर सपूतों ने भारत माता के आजादी के लिए अपने प्राणों कि आहुती तक दे दी । अनेकों प्रयासों के बाद 15 अगस्त 1947 को अर्ध रात्री मे हमारा भारत देश अंग्रेजों कि गुलामी से हमेशा हमेशा के लिए आजाद हो गया । उन वीर सपूतों कि आहुती हम सभी को सदैव याद करनी चाहिए । सिख जाट गुरखा मद्रासी गरीब –अमीर छोटा बड़ा ब्राहमण क्षत्रिय वैश्य शूद्र वनवासी जनजाति सभी ने देश को आजाद करने मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सभी ने मिलकर लहू बहाया है तब जा कर हम सभी को यह आजादी मिल पाया है।

स्वतन्त्रता आंदोलन में जनजातियों का संघर्ष और बलिदानः– भारत वीर सपूतों का देश है। जब–जब इस भारत भूमि पर कोई संकट आन पड़ी है तब–तब भारतभूमि वीर सपूतों को अवतरण कर उन सारी समस्याओं का समाधान किया है। जिस प्रकार रघुवंश मे प्रभु श्री राम ने भारत भूमि पर अत्याचारी रावण के पांपों अत्याचारों को खतम करने के लिए जनम लिया , भगवान श्री कृष्ण ने इसी भारत भूमि पर कंश को और उसके अनैतिक कृत्यों को खतम करने के लिए भारत भूमि पर अवतरित हुए ठीक उसी प्रकार इस भारत भूमि पर अनेक वीरों अनेक योद्धाओं, धार्मिक ज्ञाताओं का जनम हुआ है। इसी क्रम मे अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए और भारत माता को स्वतन्त्रता दिलाने के लिए अनेक वीर सपूत भारत भूमि मे जनम ले कर अपने प्राणों की आहुती दी है।

मोहनदास करम चन्द्र गांधी, डॉ० भीम राव अंबेडकर ,डॉ० राजेंद्र प्रसाद ,सरदार बल्लभभाई पटेल,जवाहरलाल नेहरू, भगत सिंह ,रानी गैदिनलू ,पिंगली वेंकया ,रानी लक्ष्मी बाई ,वीरपंडिया कट्टोबोमन , मंगल पांडे, बख्त खान, चेत राम जाटव , बहादुर शाह जफर ,बेगम हजरत महल, आसफ आली, अस्फाकुल्ला खान, मनमथनाथ गुप्ता, राजेंद्र लाहीड़ी , सचीन्द्र बख्शी, राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह,

[1]डॉ॰ एम॰ पी॰ एस॰ ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट 2017 पत्रिका डॉट कॉम

जोगेश चन्द्र चटर्जी, एनी बेसेंट, बघा जतिन , कर्तार सिंह ,बेसवा सिंह ,सेनापति बापट, बिकाजी कामा, कन्हैयालाल मुन्सी , तिरुपुर कुमारण ,लक्षमी सहगल, पारबती गिरि,कन्नेगंठी हनुमानथु , अल्लुरी सिताराम, सुचिता कृपलानी, भावभुषण मित्रा, चन्द्र शेखर आजाद, सुभाष चन्द्र बोस, चितरंजन दास, प्रफुल्ल चाकी, खुदिराम बोस, मदन लाल ढींगरा , सूर्य सेन, प्रीतिलता वद्देदार राश बिहारी बोस , श्यामजी कृष्ण वर्मा, सुबोध राय, टंगुटुरी प्रकाशम, उबाइदुल्लाह सिंधी, वाशुदेव बलवंत फडके,विनायक दामोदर सावरकर इत्यादि अनेकों वीर सपूतों को आज हम जानते हैं।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई,जैन, बौद्ध,पारसी अर्थात सभी धर्मों के वीर सेनानियों ने और ब्राहमण क्षत्रिय वैश्य शूद्र सभी वर्गों के लोगों ने अपने प्राणों की आहुती दी है। इसी क्रम मे हमारे देश के जनजातीय वर्ग के लोग भी पीछे नहीं रहे हैं। जब हम अनुसूचित जनजाति की परिभाषा का अध्ययन करते हैं तो मिलता है की ऐसा वर्ग या ऐसा समुदाय जो राज्यों के विकास से पूर्व अपने अस्तित्व मे था और आज भी विकसित राज्यों से परे अर्थात बाहर हैं। तो हमे यह पता चलता है की सभ्य समाज से ये प्राचीन काल से ही दूर रहे हैं लेकिन स्वतन्त्रता संग्राम मे अनेकों जनजातियों ने अपने प्राणों की आहुती दी हैं। भारत मे अनेकों (560 से ज्यादा) जनजातियाँ हैं।[2] जिनमे से जनजातियों ने देश के लिए, देश की आन–मान मर्यादा और स्वतन्त्रता के लिए अपने आप को भारत माता को समर्पित किया था।

प्रसिद्ध कथाकार श्री बद्रि नारायण द्वारा साफ साफ व्यक्त है की नारायण जी ने 1857 मे प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम मे जनजातियों और दलितों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इतना ही नहीं जहां जनजाति वर्ग से अनेकों वीर सपूतों ने स्वतन्त्रता संग्राम मे भाग किया जिसके याद मे आज भी जनजाति समुदाय के लोग उन सभी सपूतों को पूजते हैं, उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।[3] मध्य प्रदेश मे आजादी की बिगुल बजाने का सबसे पहले काम जनजातियों ने ही किया था। ना सिर्फ अंग्रेजों के प्रति बल्कि मुगल काल मे भी जनजातियों ने अपने जंगल, जमीन और स्वतन्त्रता के लिए जी जहांन से कोसिस किए थे। मध्य प्रदेश के जनजातियों का इतिहास लंबा है जिन्होने मंजरों, तीर कमानों, भाला, बरछी, लाठी, डंडे, फरसा, गैंता, घरेलू हथियारों से ही आन मान मर्यादा की रक्षा की है। अपनी मातृभूमि के प्रति सच्चा प्रेम रखने वाले प्रकृति प्रेमी जनजातियों ने जब अंग्रेजों के प्रति युद्ध का बिगुल बाजा दिया था तो अंग्रेजों ने इनको विद्रोही कहा था। 1819 मे ही खानदेश पर अंग्रेजों की हुकूमत को जनजातियों ने नहीं स्वीकारा था, तब भील विद्रोह का आरंभ हुआ था। भील नायक दसरथ का नाम उस समय के स्वतन्त्रता सेनानियों मे गिना जाता है। भगोजी नायक, काजर सिंह, भिलाला नायक, 1857 मे तांत्या भील, भीमा नायक, खाजया नायक, सितराम कवर,रघुनाथ सिंह मंडलोई, श्याम सिंह, रेउया नायक, कल्लू बाबा, नाना जगताप, दौलत सिंह, टिक्का सिंह, निहाल सिंह, तिकरम जमादार जवाहर सिंह , नादिर सिंह, चिल नायक, हिरिया, गौंडा जी, दंगलिया शिवराम पेंडीया , सुतवा, उचेत सिंह, इत्यादि थे। जबलपुर के राजा शंकर शाह, रघुनाथ शाह, जिनको अंग्रेजों ने तोप से उड़ा दिया था।

मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा मे गोंड़ जनजाति के बादल भोई, सहारा भोई, इमरत भोई, लोटिया भोई, टापरु भोई, झंका भोई, इत्यादि ने अमर बलिदान दिया था। जंगल सत्याग्रह टूरिया सत्याग्रह मे भी जनजातियों ने जम कर विरोध किया था। गुड्डे बाई साकिन, रेनी बाई साकिन , देभों भाई सा, भीलवा बिरझु ,भाई सा, मरझोडु के शव को भी घर वाले नहीं देख पाये। 1914 से 1920 तक बिहार के छोटे नागपुर मे ताना भगत का आंदोलन मे जतरा उराव, भी सामील थे। अंग्रेजो को टेक्स देने से मना किया और अंग्रेजों के प्रति विद्रोह किया था।झारखंड के गुमला जिला के जतरा भगत जिन्होने 1912 से 1914 तक विद्रोह किया।1917 से 1919 तक के कुकी जनजाति का विद्रोह जिसके नायक इराबोत, और अरीबाम चाओतियान, सिंह थे।जेलियायोंग आंदोलन मे जदोनांग की फांसी को हम सभी भूल चुके हैं।

कोल विद्रोह

[2]डॉ० योगेंद्र पाल सिंह "राजनीति विज्ञान"

[3]"भारतीय राजनीति विज्ञान" शोध पत्रिका, वर्ष तृतीय, जनवरी दिसंबर 2011, पृष्ठ –193

कोल जनजाति के द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ उनके अत्याचारों के खिलाफ आंदोलन किया गया था जिसे कोल विद्रोह कहते हैं। इसमे मुख्य रूप से बुद्धू भगत और जोया भगत थे।

संथाल विद्रोह

1855 मे सिद्धू कनहु चंद और भैरव ने अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की बिगुल बजाई थी । 28 दिसंबर 1861 को जयंतिया विद्रोह मे नंगबाह ने विद्रोह किया और अंग्रेजों के साथ युद्ध किया।

मुंडा विद्रोह

1898 मे मुंडाओं ने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध और विद्रोह आरंभ किया था जिनके नायक बिरसा मुंडा थे। बिरसा मुंडा को आज भी भगवान मानते हैं । 9 जून 1900 मे बिरसा जी का रांची के जेल मे अंत हो गया। हजारों मुंडा , मारे गए, जेल हुआ और आजीवन कारावास से भी दंडित किया गया।

खेरवार आंदोलन

भागीरथ मांझी के नेतृत्व मे 1874 मे यह आंदोलन आरंभ हुआ था। इसी क्रम मे बांका बैगा और मोहन पनिका, दयाल दास पनिका, बिसाहू दास महंत ,भी देश की आजादी मे महत्त्व पूर्ण योगदान दिये। तिलका मांझी का विद्रोह,1780, 1855 कानून विद्रोह, 1857 मे नगाँव का संघर्ष, आसाम मे मनीराम, चितगाव मे जंनजातियों का संघर्ष, उत्तरी कछार मे वीर फुललोसा का संघर्ष, सुरेन्द्र राय का संघर्ष, फुलकूवर, माल कोरी, ध्रुव राज, सतना के रंपत सिंह, पाटन के महुआ कोल रानी अवंतीबाई , उड़ीसा के जनजाति धरू कोल मुंडा सभी ने अंग्रेजों के प्रति विद्रोह किया था।1[4] गुजरात के जोरीय रूपा जलालिया, नाशिक के भागे जी भाई, तुम्बी भील, वाइजुबाबा के शाई बाबा जी नायक, आंध्र प्रदेश मे राम जी तथा अनेकों ऐसे जनजातियों ने भारत के स्वतन्त्रता मे अपने जीवन को कुर्बान कर दिया है, इस प्रकार जनजातियों ने भी भारतीय स्वतन्त्रता मे अमूल्य योगदान दिया है।

निष्कर्ष :– भारत की आजादी मे भारत के सभी धर्मों, हिन्दू मुस्लिम सीख ईसाई जैन बौद्ध तथा सभी समुदायों ब्राहमण क्षत्रिय वैश्य शूद्र सभी ने महत्त्व पूर्ण योगदान दिया है। आवस्यकता है की उन सभी को भी बराबर की श्रद्धांजलि मिले जिन्होने देश की आजादी मे अपना महत्त्वपूर्ण जीवन न्योछावर कर दिया। वे सभी देश की आजादी के लिए मौत को गले लगा लिए तो हम सभी भारत वासियों का यह कर्तव्य है की बिना किसी भेदभाव के सभी वीर सपूतों को सम्मान से श्रद्धांजलि अर्पित करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1– डॉ॰ एम॰ पी॰ एस॰ ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट 2017 पत्रिका डॉट कॉम
2–भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका वर्ष तृतीय जनवरी दिसंबर 2011 पृष्ठ –193
3 भारतीय राजनीति विज्ञानशोध पत्रिका वर्ष तृतीय जनवरी दिसंबर 2011, पृष्ठ –193
4 ज्योति विहार (1987 हिस्ट्री आफ ट्राईवल्स रिवोल्ट्स इन उड़ीसा शमबलपुर विश्वविद्यालय उड़ीसा पृष्ठ –21

[4]ज्योति विहार (1987) हिस्ट्री आफ ट्राईवल्स रिवोल्ट्स इन उड़ीसा , शमबलपुर विश्वविद्यालय उड़ीसा पृष्ठ –21